इकाई-III Date-21.05.2020

Topic- भाषा अर्जित करना और भाषा सीखने में अंतर

बिहार अथवा अन्य राज्यों के बच्चों को यह समझाने की जरूरत नहीं है कि भाषा कौन होता है और मैथिली कौन तथा अंगिका कौन। इस प्रकार भाषा सामाजिक वस्तु भी है और समाज के संपर्क में आने से इसमें निरंतर बदलाव आता है, क्योंकि अंततः भाषा का प्रयोग भी समाज में रहकर समाज के सदस्यों के साथ किया जाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार जब हम घर की भाषा और मातृभाषा की बात करते हैं तो इसके अंतर्गत घर की भाषा, बड़े कुनबे की भाषा, आस-पड़ोस की भाषा आदि आ जाती है, जो बच्चा स्वाभाविक रूप से अपने घर और समाज के वातावरण से ग्रहण कर लेता है। बच्चों में भाषा की जन्मजात क्षमता होती है। कई बार जब बच्चें स्कूल आते हैं तो उनमें पहले से ही दो या तीन भाषाओं को समझने और बोलने की क्षमता होती है। वे न केवल उन भाषाओं को सही-सही बोल लेते हैं; बल्कि उनका उचित उपयोग भी कर रहे होते हैं। यहाँ तक कि भिन्न प्रतिभा वाले बच्चे, जो बोल नहीं पाते वे भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए उतने ही जटिल वैकल्पिक संकेतों और प्रतीकों का विकास कर लेते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भाषा सीखना अपने आप में एक जटिल प्रक्रिया है। भाषा का प्रयोग जितना सरल नजर आता है। दरअसल उतना है नहीं। भाषा में कुदरती रूप से निर्देशित सीखना शामिल होता है। जहाँ तक भाषा अर्जित करने की उम्र का सवाल है, उस संदर्भ में लेनबर्ग का मानना है कि एक तयशुदा निर्णायक अवधि होती है जिसके दौरान भाषा अर्जन संभव है। उन्होंने दावा किया था कि यह (अवधि) करीब दो वर्ष की उम्र से शुरु होती है और किशोरावस्था में समाप्त हो जाती है। इसके बाद, उनके मुताबिक "भाषा अर्जन नामुमकिन है"। मगर इस कठोर निर्णायक अवधि के बारे में वे गलत थे।

अब आप भाषा अर्जन की स्थिति को बखूबी समझ गए होंगे। जब बच्चे विद्यालय आने के बाद किसी भाषा को सीखते हैं तो वह भाषा-अधिगम की स्थिति है। अब सवाल यह उठता है कि क्या भाषा अर्जन और भाषा अधिगम की प्रक्रिया समान है इस संबंध में क्रैशन का मानना है कि भाषा अर्जन और भाषा अधिगम आदि समरूप नहीं हैं तो मिलती-जुलती प्रक्रियाएँ हैं। भाषा-अर्जन के माध्यम से बच्चे अपनी प्रथम भाषा में योग्यता विकसित करते हैं। यह एक अवचेतन प्रक्रिया है। भाषा सीखने वाले सामान्यतः इस बात से अनभिज्ञ होते हैं कि वे भाषा सीख रहे हैं।

Scanned with CamScanner